Research Paper Literature

साहित्यकार हृदयेष की दृश्टि में विवाहेत्तर संबंध तनाव का कारण

Sahitykar Hrudayesh Ki Drushti Me Vivahettar Sambandh Tanav Ka Kaaran

* Dr. Madhulika

* Asst Professor Hindi Departmant C.R.M, Jaat. P. G. College, Hisar

Keywords :

उन्होंने लिखा है कि भारतीय परिवारों में विवाह से पूर्व यौन संबंधों का वर्णन है यदि कहीं यह संबंध स्थापित हो जाते हैं, तो उन्हें घृणा की दृश्टि से देखा जाता था, लेकिन आज के समय में ऐसा कुछ नहीं है आज आधुनिक युग की दौड़ में लड़का–लड़की को विवाह से पूर्व मिलने की आजादी होती है। आज नारी के लिए पर – पुरूश का स्पर्ष अर्थात् संसर्ग न तो वर्जित है और नहीं पाप समझा जाता है।

हृदयेष के उपन्यास 'सांड' में प्रियवंदा (नायिका) एक अध्यापिका है। जो अविवाहित है। उसके भीतर भी स्वाभाविक इच्छाएं है। परन्तु वह घर की जिम्मेवारियों के कारण अपने मन की इच्छाओं को दबा रही है। वह एक लड़के से प्यार करने लगती है ''एकाएक अतीक उन पर पास के कमरे से श्रृंगार मेज पर रखी नेल पॉलिष उठा लाया और ब्रुष से प्रियवंदा के माथे पर बिन्दी बना दी।'' यह आपने क्या किया ? प्रियवंदा के चेहरे पर एक साथ चौंक षरमाहट, नाराजगी और गंभीरता दौड़ आई। मैनें दो दिन पहले एक लेखिका की जीवनी पढ़ी है। उसके प्रेमी ने उससे षादी का प्रस्ताव यों ही माथे पर बिन्दी लगाकर किया था। लेकिन मैं लेखिका नहीं हूं।

'लेखिका से पहले वह औरत थी और संयोग देखिए प्रस्ताव करने वाला वहां भी एक मुसलमान था और लेखिका हिन्दू।'

प्रियवंदा पहले गिराने–उठाने के क्रम को विराम देती हुई सी बोली, यह फैसला आपने अकेले ले लिया ? प्रस्तुत उपन्यास में प्रियवंदा अतीत के साथ कई बार घुमने के लिए भी गई थी, और सिनेमा देखने के लिए भी गयी थी। इसमें विवाह से पूर्व यौन संबंध को उभारा गया है और नायिका स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर है। यह अपनी इच्छुओं की पूर्ति के लिए रास्ता तलाष लेती है। हमारे समाज में ऐसे संबंधों को मान्यता नहीं थी। लेकिन आज के समाज में यह आम बात हो गई है।

किन्तु आज पाष्चात्य सभ्यता के प्रभाव से यह सीमा रेखा लगभग समाप्त हो गई है। आज अपने स्वार्थों की पूर्ति या मन बहलाने के लिए कहीं स्थानान्तरण के लिए तो कहीं व्यक्तिगत तृप्ति के लिए विवाह से पूर्व यौन संबंधों का प्रचलन हो गया है। इसी कारण विवाह से पूर्व बनाए संबंधों से निम्नलिखित कारण तनाव को जन्म देते हैं –

अनमेल विवाह :
जिसमें आयु, गुण, स्वभाव और पद के आधार पर दोनों में बहुत बड़ा अन्तर होता है। स्त्री और पुरूश के विचारों में ताल–मेल नहीं बन पाना, झगड़ना और पुरूश की मांग को पूरान कर सकने के कारण स्त्री और पुरूश में अनमेल की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। हृदयेष जी की 'सम्मान' कहानी में माता–पिता निर्धनता के कारण अपनी बेटी की षादी बूढे से कर देते हैं। 'उसकी यात्रा' कहानी में भी अनमेल विवाह के इसी रूप को उद्घाटित किया गया है। ''ऊपर लगे बल्ब की रोषनी औरत के चेहरे पर सीधी गिर रही थी। नाक की कील का नग अपेक्षाकृत अधिक चमक रहा था। औरत के पैरों में ताजा महावर भी लगाया। अतिरिक्त रोमांच के साथ कैदी औरत के साथ के मर्द को देखने लगा। मर्द अब चादर सिर पर खींच ली थी और किसी गहरी का मानिन्द बैठा था। यह षख्स क्या इस औरत का पति है ? उम्र में काफी अन्तर है। पति है तो विवाह अनमेल है औरत की आंखों में षायद तभी उदासी की छाया है।

अन्तर्राश्ट्रीय विवाह :
जब किसी एक राश्ट्र के स्त्री–पुरूश किसी अन्य राश्ट्र के पुरूश व अन्य स्त्री से वैवाहिक संबंध जुड़ जाते हैं तो अन्तर्राश्ट्रीय विवाह होता है। उदा0 भारत में कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमति सोनिया गांधी जी का विवाह स्व0 श्री राजीव गांधी से हुआ था। यह विवाह अन्तर्राश्ट्रीय विवाह ही है। हृदयेष जी ने भी अपनी रचनाओं में इसे मान्यता दी है।

उनके 'पुनर्जन्म' में इसे दर्षाया है ''कुछ समय बाद उसका पत्र आया उसने वहां साथ काम करने वाली एक यहूदी लड़की से षादी कर ली है।'' तब वह प्रतापगढ़ आ चुके थे और जगदीष बाबू भी उनके निकट आ चुके थे। जगदीष बाबू ने कहा कि समझदारी इसी में है कि वह विवाह को मान्यता दे दें और लड़के से संबंध बनाए रखें।

भारतीय समाज अधिकतर विदेषी बहुओं को स्वीकार नहीं कर पाता। विदेषी संस्कार और भारतीय संस्कार अलग–अलग है। पति भारतीय है, पत्नी विदेषी है, जहां एक कांट्रेक्ट की तरह होता है जब चाहा कर लिया और जब चाहा तोड़ लिया।

अन्तर्जातीय विवाह :
''हिन्दुओं में अनेक उपजातियां है। उपजाति में विवाह करने को 'अर्न्तविवाह कहते हैं और इसके बाहर विवाह किया जाए, तो उसे अन्तर्जातीय विवाह कहा जाता है। अन्तर्जातीय विवाह से अभिप्राय जात–बिरादरी से परेयर दूर किया गया विवाह है। भारत के प्राचीनक. ाल में क्षत्रियों में अन्तर्जातीय विवाह का प्रचलन था। वे अपहरण या युद्ध द्वारा षत्रु कन्या को जीतकर उसके साथ विवाह किया करते थे। राजाओं के निवास अनेक जातियों की रानियों से भरे रहते थे। यह प्रचलन उच्च वर्ग के लोगों में ही था। मध्य वर्ग अथवा निम्न वर्ग में इस प्रकार के विवाह को घृणित और निन्दित माना जाता है। आजकल यह विवाह आम बात हो गयी है। इसे प्रेम की संज्ञा दी जाने लगी है। हृदयेष जी के उपन्यास 'उत्तराधिकारी' में बाबू हरेराम की लड़की द्रौपदी अपने एक साथी अध्यापक से प्रेम करने लगती है और उससे वह विवाह कर लेती है।

भारत में भी अब षिक्षा के कारण जातपात की दीवार को गिरा दिया है 'सांड' उपन्यास में अतीक नायक के माध्यम से इसे दर्षाया गया है।'' अब युवक–युवतियां षिक्षित होने के कारण जात–पात को कोई ध्यान नहीं रखते। इसलिए अंतर्जातीय विवाह सामान्य हो गए है। आजकल हम समाचार पत्रों के विज्ञापनों में देखते भी है कि उनमें लिखा होता है कि सुयोग्य वर या वधु चाहिए जिसके लिए जाति को बंधन नहीं है।

समलैंगिता :
आज आधुनिक युग में यौन संबंधों में बहुत परिवर्तन आया है। एक समय था जब केवल स्त्री–पुरूश ही आपस में प्रेम करते थे और यौन संबंध बना सकते थे। लेकिन आज के दौर में स्त्री से स्त्री और पुरूश से पुरूश भी यौन संबंध बना लेते है। हृदयेष जी के उपन्यास 'पुनर्जन्म में दर्षाया है – ''उस राज मालती की आंख खुली, तो भाई खाट पर नहीं था आदि।

प्रेम और यौन संबंधों का बदलता स्वरूप :
भारतीय पारिवारिक जीवन में विवाह से पूर्व कुछ आदर्ष और मूल्य विद्यमान रहे है। लेकिन आधुनिक युग में उन मान्यताओं में परिवर्तन नजर आता है। लगता है कि वे पारिवारिक रूढियां, मान्यताएं, संस्कार और परम्पराएं अर्थहीन सी हो गई है। नए परिवेष के नए संद. र्भों में वे व्यर्थ नजर आती है। स्त्री और पुरूश के संबंधों में पाप और पुण्य की जो परिधि पहले जटिल और संकीर्ण थी, अब वो खुली और व्यापक हो गई है। पहले के समाज में यौन संबंधों को लेकर जितना विरोध किया जाता था, आज वह विरोध मन्द पड़ गया है।

आधुनिक युग में भी भारतीय संस्कृति में यौन संबंधों को खुले तौर पर स्वीकार नहीं किया गया है। आजकल स्त्री का यौन षोशण इतना बढ़ा गया है कि उसका घर से बाहर निकलना भी मुष्किल हो गया है। आज के युग में स्त्री को प्यार करना भी खतरे से खाली नहीं रह गया है। हृदयेष जी ने अपने उपन्यास 'दण्डनायक' में यौन उद्भावना का सफल चित्रण किया है।

विवाहेतर प्रेम :
परिवार में तीसरे व्यक्ति का दखल बढ जाता है, तो घर की षान्ति भंग हो जाती है। तीसरे व्यक्ति के साथ जब षारीरिक संबंध स्थापित हो जाते हैं तो आपसी मारपीट, उदासी, ठंडापन, तटस्थता और फिर उपेक्षा सामान्य सी बात हो जाती है। 'दण्डनायक' में यही स्थिती कुन्तों की होती है जिसके पति के अन्य स्त्री के साथ विवाह के बाद भी नाजायज संबंध है – ''पुरू के दिनों में पति के न जाने पर वह स्त्री घर पर स्वयं आई थी माथे पर बड़ी गोल बिन्दी और ओठों पर गहरी लाली लगाने वाली वह स्त्री कसे बदन की थी जिसकी आंखों में सांप की आंखों जैसी कीलने वाली कषिष थी उसकी नीयत को परखकर, कुन्तों ने उसे झिड़का था।''
इसी प्रकार 'नया परिवार' कहानी में भी पति–पत्नी के बीच पत्नी की बहन आती है। जिस पर नायक का दिल आ जाता है। ''उसका विवाह जीवन केवल तीन वर्श का ही रहा।''

प्रेम और यौन संबंधों में परिवर्तन :
यौन संबंध जब जबरदस्ती स्थापित किए जाते हैं, तो वह बलात्कार कहे जाते हैं – 'उत्तराधिकारी' कहानी संग्रह 'आर्मी' में कुछ सैनिक ही औरतों के साथ जबरदस्ती

बलात्कार करते हैं।

बलात्कार बड़े और धानी व्यक्तियों के लिए सामान्य सी बात हो गयी है। बलात्कार के बाद हत्या और हत्या के बाद भी सबूतों को मिटाना धनी और षक्तिषाली लोगों का रोज का कर्म बन गया है।

वर्तमान युग में प्रेम संबंधों में परिवर्तन आ गया है। व्यक्तिगत सुविधाओं के अनुरूप 'प्रेम' षब्द की परिभाशाएं अनेकानेक हो गई है। अर्थात् आदर्ष प्रेम का स्वरूप पूर्णतः बदल गया है। आत्मिक प्रेम ने षारीरिक प्रेम परिणित पाली है। एकान्त में पुरूश, पौरूश का प्रदर्षन करता है, लेकिन प्रकट होने पर तथा समूह के सम्मुख दो का पुरूश है।

सामाजिक संबंधों में परिवर्तन के बिन्दु लक्षित करने वाली भूमिका निभाने का कार्य यौन–भावना ने जब कभी भी साम्प्रदायिक दंगे फैलते हैं तो चारों तरफ दहषत फैल जाती है और चारों तरफ मारकाट षुरू हो जाती है 'दण्डनायक' उपन्यास में कर्फ्यू किया है – ''मुस्सलटा जा रहा है' एक गली के मुहाने पर पांच छह लोगों में बोला।

उस बगलगीर अधेड़ आदमी ने पहले उन लोगों की ओर देखा, फिर उसकी ओर। उसका चेहरा डर से पीला पड़ गया था।

''बिरजू ने डीजल छोड़कर चक्की में आग लगा दी।''

प्रस्तुत कहानी 'दो वतन' में साम्प्रदायिकता की इसी आग को हृदयेष ने मार्मिकता के साथ दर्षाया है खून ..... लाषें ..... रोना ..... चीखना ..... आगजनी ..... लूटपाट।

नियायू मियां स्वीकारते हैं कि सन् पचास में इस षहर में जो हिन्दू–मुस्लिम दंगे हुए और दंगों के आतंक से जो वह हिम्मत हार गए और मूल्क छोड़ दिया तो उन्होंने अक्लमंदी नहीं की थी। इन्सान का पागलपन कितनी देर का। हर पागलपन उतरता है। उसके उतरने का बस इन्तजार होना चाहिए और सब्र भी।

सभी दृष्य–दृश्टिपात हृदयेष के कथा–साहित्य में उभर कर सामने आए हैं।

REFERENCES

1- gn;'kj miU;kl lkM] i0 222 | 2- gn;'kj lEeku dgkuh lxg] vdkjFkj i0 9 | 3- gn;'kj dgkuh lxg] ml dh ;k=kj i0 77 | 4- gn;'kj miU;kl] iu tUe] i0 35 | 5- gn;'kj ogh i0 36 | 6- vkun dekj] lekt 'kkL= dk ifjp;] i0 30 | 7- gn;'kj miU;kl] lkM] i0 224&225 | 8- gn;'k miU;kl] n.Muk;d] i0 48&49 | 9- gn;'k ejh fi; dgkfu;kj dgkuh lxg] u;k ifjokj i0 46 | 10- gn;'kj mUkjkf/kdkjh] dgkuh lxg] vkeh] i0 29 | 11- gn;'kj miU;kl] n.Muk;d] i0 173 | 12- gn;'kj lEeku dgkuh lxg] tgj] i0 56 | 13- gn;'kj ukxfjd] dgkuh lxg] vQokg] i0 29 | 14- gn;'kj ejh fi; dgkfu;kj nk oru] i0 62 |